I. नए इलाके में, II. खुशबू रचते हैं हाथ (अरुण कमल)

I. नए इलाके में

पाठ का परिचय

प्रस्तुत पाठ की पहली कविता 'नए इलाके में' है। यह इस बात का बोध कराती हैं कि जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं होता। पल-पल परिवर्तित होती इस दुनिया में स्मृतियों के भरोसे जीवन नहीं बिताया जा सकता, पुराने निशानों के बल पर मंजिल को नहीं पाया जा सकता है। यह कविता एक ऐसी दुनिया का परिचय कराती है, जो एक दिन में पुरानी पड़ जाती है। आज हर दरवाज़ा खटखटाकर पूछना पड़ता है कि क्या मेरा पुराना परिचित यहीं रहता है?

काव्यांशों का भावार्थ

नए इलाके में

(1) इन नए बसते इलाकों में
जहाँ रोज़ बन रहे हैं नए-नए मकान
मैं अकसर रास्ता भूल जाता हूँ
धोखा दे जाते हैं पुराने निशान
खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़
खोजता हूँ ढहा हुआ घर

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

और ज़मीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बाएँ
मुड़ना था मुझे
फिर दो मकान बाद बिना रंगवाले लोहे के फाटक का
घर था इकमंज़िला
और मैं हर बार एक घर पीछे
चल देता हूँ
या दो घर आगे ठकमकाता

भावार्थ–प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने बस्तियों में तीव्रगति से हो रहे निर्माण को एक संकट के रूप में दर्शाया है। कवि किसी नई बस्ती में पहुँचता है, तो प्रायः रास्ता भूल जाता है, कारण यह है कि वहाँ रोज़ नए-नए मकान बन रहे हैं। इसलिए अपने आने-जाने के रास्तों और ठिकानों तक पहुँचने के लिए जो निशान बनाए होते थे, वे अब काम नहीं आते। वह पीपल का पुराना पेड़ खोजता है या कोई टूटा हुआ घर ढूँढ़ता है या ज़मीन का कोई खाली टुकड़ा ढूँढ़ता है, जहाँ से उसे बाएँ हाथ की तरफ़ मुड़ना था, परंतु बहुत समय बाद न तो पीपल का पेड़ रहा, उसे लोगों ने उखाड़ दिया। न गिरा हुआ घर रहा, वहाँ किसी ने नया मकान बना लिया। न ज़मीन का खाली टुकड़ा रहा; क्योंकि वहाँ भी किसी ने मकान बना लिया।
अतः उसकी सारी पुरानी निशानियाँ गायब हो गईं। उसे याद था कि खाली प्लाट के दो मकान बाद एकमंजिला मकान था, जिसके बाहर बिना रंगवाला लोहे का फाटक लगा था, परंतु अब वह एकमंजिला मकान दुमंजिला हो गया और उसका फाटक सज-धज गया। इसलिए वह अक्सर ठिकाना भूलकर या तो अपने गंतव्य से एकाध घर पहले ही मुड़ जाता है या गंतव्य से दो घर आगे पहुँच जाता है।

(2) यहाँ रोज़ कुछ बन रहा है
रोज़ कुछ घट रहा है
यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं
एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
जैसे वसंत का गया पतझड़ को लौटा हूँ
जैसे बैसाख का गया भादों को लौटा हूँ
अब यही है उपाय कि हर दरवाज़ा खटखटाओ
और पूछो–क्या यही है वो घर?
समय बहुत कम है तुम्हारे पास
आ चला पानी ढहा आ रहा अकास
शायद पुकार ले कोई पहचाना ऊपर से देखकर।

भावार्थ–कवि कहता है कि नई बस्ती में रोज़ ही कुछ नया बन रहा है, कुछ पुराना टूट रहा है। इस बदलते परिवेश के चलते हमारी स्मृतियाँ (यादें) व्यर्थ हैं, उनका कोई लाभ नहीं अर्थात् इस दुनिया में ऐसा लग रहा है, मानो पुरानी यादों को मिटाने की एक होड़-सी लगी है। यादें तो एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती हैं। कवि को ऐसा लग रहा है कि मानो वह वसंत में गया और पतझड़ में लौटा हो या फिर बैसाख के महीने का गया वह भादों के महीने में लौटा हो।
ऐसा प्रतीत होता है कि एक पल में कई सदियाँ गुज़र गईं। आज इस नई दुनिया में कोई अपनापन नहीं रह गया है। उसकी इच्छा होती है कि हर दरवाज़ा खटखटाकर पूछे कि क्या यह वही घर है, जिसमें उसके परिचित रहा करते थे। आजकल की दुनिया में ऐसा लगता है, मानो आकाश ढहा जा रहा है और ऊपर से पानी बहता आ रहा है। वह ऊपर की ओर भी देखता है और आशा करता है कि कोई उसे पहचानकर पुकार ले। कोई तो उससे आत्मीयता दर्शाए।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) इन नए बसते इलाकों में
जहाँ रोज़ बन रहे हैं नए-नए मकान
मैं अक्सर रास्ता भूल जाता हूँ
धोखा दे जाते हैं पुराने निशान
खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़
खोजता हूँ ढहा हुआ घर
और ज़मीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बाएँ
मुड़ना था मुझे
फिर दो मकान बाद बिना रंगवाले लोहे के फाटक का
घर था इकमंज़िला
और मैं हर बार एक घर पीछे
चल देता हूँ
या दो घर आगे ठकमकाता

1. रोज़ नए-नए मकान कहाँ बन रहे हैं–
(क) गाँव में (ख) शहर में
(ग) पुराने इलाकों में (घ) नए बसते इलाकों में।

2. कवि के साथ नए इलाके में अक्सर क्या होता है–
(क) उसे पुराने मित्र मिल जाते हैं
(ख) वह रास्ता भूल जाता है
(ग) उसे कुछ कुत्ते मिल जाते हैं
(घ) वह गिर पड़ता है।

3. कवि को कौन धोखा दे जाता है–
(क) उसका भाई (ख) उसका मित्र
(ग) उसका नौकर (घ) पुराने निशान।

4. कवि क्या खोजता है–
(क) पीपल का पेड़ (ख) ढहा हुआ घर
(ग) ज़मीन का खाली टुकड़ा (घ) ये सभी।

5. इकमंज़िला मकान कैसा था–
(क) बहुत ऊँचा
(ख) टूटा-फूटा
(ग) बिना रंगवाले लोहे के फाटक का
(घ) लकड़ी के फाटक का।

उत्तर– **1.** (घ) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (ग)।

(2) यहाँ रोज़ कुछ बन रहा है
रोज़ कुछ घट रहा है
यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं
एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
जैसे वसंत का गया पतझड़ को लौटा हूँ
जैसे बैसाख का गया भादों को लौटा हूँ
अब यही है उपाय कि हर दरवाज़ा खटखटाओ
और पूछो–क्या यही है वो घर?
समय बहुत कम है तुम्हारे पास
आ चला पानी ढहा आ रहा अकास
शायद पुकार ले कोई पहचाना ऊपर से देखकर।

1. नए इलाके में किसका भरोसा नहीं–
(क) मित्रों का (ख) परिवार वालों का
(ग) स्मृति का (घ) पुलिस का।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2. एक ही दिन में क्या पुराना पड़ जाता है–
(क) वस्त्र (ख) पुस्तक
(ग) दुनिया (घ) रास्ता।
3. कवि को लगता है; जैसे वह–
(क) चैत्र का गया वैसाख को लौटा है
(ख) बैसाख का गया भादों को लौटा है
(ग) भादों का गया सावन को लौटा है
(घ) कल का गया आज लौटा है।
4. अब यही उपाय है कि–
(क) वापस चले जाओ
(ख) जहाँ खड़े हो, वहीं बैठ जाओ
(ग) दरवाज़ा खटखटाकर घर का पता पूछो
(घ) ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाओ।
5. कवि के अनुसार हमारे पास क्या कम है–
(क) खाने का सामान (ख) धन
(ग) समय (घ) ज्ञान।

उत्तर– 1. (ग) 2. (ग) 3. (ख) 4. (ग) 5. (ग)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. 'नए इलाके में' कविता के कवि हैं–
(क) अरुण कमल (ख) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(ग) हरिवंशराय बच्चन (घ) राजेश जोशी।
2. अरुण कमल का जन्म कब हुआ–
(क) 15 फरवरी 1950 में (ख) 15 फरवरी 1951 में
(ग) 15 फरवरी 1952 में (घ) 15 फरवरी 1954 में।
3. अरुण कमल का जन्म किस प्रदेश में हुआ–
(क) उत्तर प्रदेश (ख) बिहार
(ग) मध्य प्रदेश (घ) राजस्थान।
4. 'नए इलाके में' कविता में कैसी दुनिया का वर्णन है–
(क) जो कभी नहीं बदलती
(ख) जो कभी पुरानी नहीं दिखती
(ग) जो एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है
(घ) जो मनुष्य के रहने योग्य नहीं है।
5. 'नए इलाके' में कविता किस बात का बोध कराती है–
(क) जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं होता
(ख) जीवन में सबकुछ स्थायी है
(ग) जीवन नए मकान की तरह है
(घ) जीवन पुराने मकान की तरह है।
6. कविता में कवि किस नव-निर्माण की बात करता है
(क) नए घर बनाने की (ख) नए कारखाने लगाने की
(ग) नई सड़कें बनाने की (घ) परिवर्तन की।
7. नए बसते इलाके में कवि रास्ता क्यों भूल जाता है–
(क) क्योंकि वह बूढ़ा हो गया है
(ख) क्योंकि वह अनपढ़ है
(ग) क्योंकि उसके बनाए पुराने निशान नष्ट हो गए हैं
(घ) क्योंकि किसी ने उस पर जादू कर दिया है।
8. नए बसते इलाकों में रोज़ क्या होता है–
(क) चोरी होती है (ख) झगड़ा होता है
(ग) पेड़ काटे जाते हैं (घ) नए-नए मकान बनते हैं।
9. पुराने निशान क्या करते हैं–
(क) कवि को आकर्षित करते हैं
(ख) कवि को धोखा दे जाते हैं
(ग) कवि को भटका देते हैं
(घ) कवि को बीते समय की याद दिलाते हैं।
10. कवि को कहाँ से बाएँ मुड़ना था–
(क) पीपल के पास से
(ख) नीम के पास से
(ग) ज़मीन के खाली टुकड़े के पास से
(घ) पुराने मकान के पास से।
11. बिना रंग वाले लोहे के फाटक वाला घर कितने मकान बाद था–
(क) दो (ख) तीन
(ग) चार (घ) पाँच।
12. कवि हर बार कितने घर आगे ठमक जाता है–
(क) एक घर आगे (ख) दो घर आगे
(ग) तीन घर आगे (घ) चार घर आगे।
13. यहाँ एक ही दिन में दुनिया कैसी हो जाती है–
(क) छोटी (ख) बड़ी
(ग) नई (घ) पुरानी।
14. नए इलाके में स्मृति का भरोसा क्यों नहीं है–
(क) क्योंकि वहाँ रोज़ कुछ बन रहा है
(ख) क्योंकि वहाँ रोज़ कुछ घट रहा है
(ग) क्योंकि वहाँ रोज़ कुछ बन और कुछ घट रहा है
(घ) उपर्युक्त कोई नहीं।
15. पुराने निशान न रहने से कवि क्या गलती कर देता है–
(क) दूसरों के घर चला जाता है
(ख) गली के चक्कर लगाता रहता है
(ग) वापस घर लौट जाता है
(घ) हर बार एक घर पीछे या दो घर आगे चल देता है।
16. 'वसंत का गया पतझड़ को लौटा' से आशय है–
(क) अधिक दिनों में लौटना
(ख) जल्दी लौट आना
(ग) कभी वापस न आना
(घ) अचानक और अत्यधिक परिवर्तन।
17. 'नए इलाके में' कविता में शहरी समाज की किस विडंबना को चित्रित किया गया है–
(क) सुख-समृद्धि की ललक
(ख) उपभोक्तावादी जीवन-शैली
(ग) स्नेह और संवेदनाओं का समाप्त होना
(घ) अत्यधिक व्यस्तता।
18. कवि के अनुसार क्या चला आ रहा है–
(क) तूफ़ान (ख) बादल
(ग) पानी (घ) पशुओं का झुंड।
19. 'आकाश के ढहने' का आशय है–
(क) ऊँचे भवनों का गिर जाना
(ख) बड़े-बड़े पेड़ों का उखड़ जाना
(ग) बिजली का गिरना
(घ) उच्च आदर्शों का समाप्त हो जाना।
20. कवि को अंत में किस बात की संभावना लगती है–
(क) शायद कोई जाना-पहचाना उसे पुकार ले
(ख) शायद कोई उसे रास्ता बता दे
(ग) शायद कोई उसे ठहरने का स्थान दे दे
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

उत्तर– 1. (क) 2. (घ) 3. (ख) 4. (ग) 5. (क) 6. (घ) 7. (ग) 8. (घ) 9. (ख) 10. (ग) 11. (क) 12. (ख) 13. (घ) 14. (ग) 15. (घ) 16. (घ) 17. (ग) 18. (ग) 19. (घ) 20. (क)।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

भाग-2

वर्णनात्मक प्रश्न

काव्य-बोध परखने हेतु प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : 'नए इलाके में' कवि किस नव-निर्माण की बात कर रहा है और स्मृति को क्यों खोज रहा है?

उत्तर : प्रस्तुत कविता में नव-निर्माण का अर्थ है–परिवर्तन। समाज परिवर्तनशील है, उसमें इतनी जल्दी-जल्दी परिवर्तन होता है कि पुरानी स्मृतियाँ उसी में विलीन हो जाती हैं। इसलिए कवि उन्हें खोज नहीं पा रहा है। कवि ने पुरानी निशानियों (प्राचीन परंपराओं) के आधार पर अपने रास्ते (जीवन-पथ) की जो पहचान बनाई थी, अब वे निशानियाँ लुप्त हो गई हैं।

प्रश्न 2 : नए बसते इलाके में कवि रास्ता क्यों भूल जाता है?

उत्तर : कवि नए बसते इलाके में रास्ता इसलिए भूल जाता है; क्योंकि वहाँ रोज़ नए-नए घर बन रहे होते हैं और पुराने घर तोड़ दिए जाते हैं। कवि ने जो पुराने निशान बनाए थे, वे भी नष्ट हो गए हैं। इसीलिए वह रास्ता भटक जाता है।

प्रश्न 3 : नए इलाकों में रोज़ क्या हो रहा है?

उत्तर : नए इलाकों में रोज़ नव-निर्माण हो रहा है। वहाँ रोज़ नए-नए मकान बन रहे हैं।

प्रश्न 4 : कविता में कौन-कौन-से पुराने निशानों का उल्लेख किया गया है?

उत्तर : कविता में पुराने निशान बताए गए हैं–पीपल का पेड़, ढहा हुआ घर, खाली ज़मीन का टुकड़ा, बिना रंगवाले लोहे के फाटकवाला एकमंजिला मकान।

प्रश्न 5 : पुराने निशान न रहने से कवि क्या गलती कर देता है?

उत्तर : कवि ने जो पुराने निशान बनाए थे, उनके न रहने से उसके द्वारा यह गलती हो जाती है कि वह हर बार एक घर पीछे चल देता है या दो घर आगे निकल जाता है।

प्रश्न 6 : कवि एक घर पीछे या दो घर आगे क्यों चल देता है?

उत्तर : कवि के गंतव्य के नए इलाके में रोज़ नए-नए निर्माण हो रहे हैं और पुरानी चीज़ों को हटाया जा रहा है। कवि अपने गंतव्य (घर) पहुँचने के लिए कुछ पुराने निशान बनाए थे, लेकिन वे नव-निर्माण और रोज़ होने वाले बदलाव के कारण मिट गए हैं। यही कारण है कि कवि थोड़ा भटक जाता है। वह या तो एक घर पीछे या दो घर आगे चल देता है।

प्रश्न 7 : 'वसंत का गया पतझड़ को लौटा' और 'बैसाख का गया भादों को लौटा' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर : इन दोनों वाक्यों का अभिप्राय है–अचानक और अत्यधिक परिवर्तन होना। कवि के नए इलाके में एक ही दिन में सबकुछ बदला दिखाई देता है। जहाँ कल हरे-भरे पेड़ अर्थात् वसंत था, आज वहाँ उजाड़ अर्थात् पतझड़ दिखाई देता है। इसीलिए कवि को ऐसा लगता है कि जैसे वह वसंत का गया हुआ पतझड़ में लौटा है। बैसाख में भयंकर गरमी पड़ती है, पेड़-पौधे झुलसकर सूख जाते हैं, इसके ठीक विपरीत भादों में वर्षा के कारण सब ओर हरियाली छायी होती है। आशय यही है कि बैसाख और भादों के प्राकृतिक दृश्य एक-दूसरे के विपरीत होते हैं, ऐसे में किसी एक माह में पेड़-पौधे के द्वारा किसी स्थान की पहचान निश्चित करना और दूसरे माह में उस पहचान के सहारे पहुँचना कठिन है।

प्रश्न 8 : कवि को स्मृति का भरोसा क्यों नहीं है?

उत्तर : कोई भी वस्तु बार-बार देखने से ही याद होती है। कवि जिस स्थान पर प्रायः जाता रहता है, वहाँ रोज़ कुछ बन रहा और रोज़ कुछ घट रहा है; इसलिए कवि की स्मृति उसे धोखा दे जाती है और वह उस स्थान का रास्ता भूल जाता है।

प्रश्न 9 : कवि ने इस कविता में 'समय की कमी' की ओर क्यों इशारा किया है?

उत्तर : कवि ने इस कविता में 'समय की कमी' की ओर इशारा इसलिए किया है; क्योंकि आज का मनुष्य अपने जीवन में इतना व्यस्त है कि वह अपने पुराने जीवन-मूल्यों व संस्कृति को पूर्णतः भूल चुका है। सभी लोग इतने गतिशील हैं कि उनके पास अपने जान-पहचान के लोगों को पहचानने का भी समय नहीं है। अतः संसार इतना गतिमान व परिवर्तनशील है कि प्रत्येक के जीवन में समय का अभाव है।

प्रश्न 10 : कवि ने 'नए इलाके में' कविता में समाज की किस विडंबना को चित्रित किया है?

उत्तर : प्रस्तुत कविता में कवि ने शहरी समाज की दिन-प्रतिदिन बदलती स्थिति को विडंबना कहा है। इसके कारण वहाँ आपसी स्नेह और संवेदनाएँ समाप्त हो गई हैं। जैसे पुरानी पहचान लुप्त हो गई हैं वैसे ही पुराने संबंधों के लिए लोगों के दिलों में कोई जगह नहीं रही है।

प्रश्न 11 : 'नए इलाके में' कविता के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : इस कविता का शीर्षक –'नए इलाके में' बिलकुल सही है; क्योंकि इसमें शहरी वातावरण में हो रहे नित नए बदलाव को दर्शाया गया है। नए इलाकों में निर्माण और ध्वस्तीकरण इतनी तेज़ी से हो रहा है कि कुछ भी स्थायी नहीं है। पुरानी यादों और पुराने निशानों के सहारे गंतव्य पर नहीं पहुँचा जा सकता है।

प्रश्न 12 : इस कविता में कवि ने शहरों की किस विडंबना की ओर संकेत किया है?

उत्तर : 'नए इलाके में' कविता में कवि ने स्पष्ट किया है कि नगरों व शहरों में नवीन निर्माण व एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ ने प्रगति के नाम पर मनुष्य की संवेदनाएँ व आत्मीयता समाप्त कर दी हैं। शहरों में यह असंवेदनशीलता व अमानवीयता इतनी बढ़ गई है कि यदि कोई व्यक्ति दूसरे का दरवाज़ा खटखटाकर मदद माँगता है तो वह अपनी व्यस्तता को दिखाकर उसकी उपेक्षा कर देता है। कवि ने अपनी कविता के माध्यम से शहरों की इसी विडंबना की ओर संकेत किया है।

प्रश्न 13 : नए इलाकों में तेज़ी से होने वाले परिवर्तन को कवि ने कैसे चित्रित किया है?

उत्तर : नए इलाकों में रोज़ कुछ बनता या घटता रहता है। वहाँ की दुनिया एक दिन में पुरानी पड़ जाती है। यह परिवर्तन इतनी तेज़ी से और अधिकता के साथ होता है कि जैसे–वसंत का गया पतझड़ में लौटा हो अथवा बैसाख का गया भादों में लौटा हो। कुछ ही दिनों में सबकुछ बदला हुआ दिखाई देता है।

प्रश्न 14 : 'नए इलाके में' कविता में कवि ने जो बदलाव दिखाया है, उसमें गंतव्य तक पहुँचने का क्या उपाय है?

उत्तर : नए इलाकों में नित्य नए-नए निर्माण हो रहे हैं और पुरानी चीज़ों को ध्वस्त किया जा रहा है। पुराने निशान खो गए हैं। कवि के अनुसार ऐसे में गंतव्य तक पहुँचने का एक ही उपाय है कि हर दरवाज़ा खटखटाओ और पूछो–क्या यही है वह घर?

प्रश्न 15 : 'नए इलाके में' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर : 'नए इलाके में' कविता में कवि का कहना है कि नए विकसित होते देश में सब जगह रोज़-रोज़ स्थितियाँ एवं परिवेश परिवर्तित होते रहते हैं। वह वहाँ जाकर अपने गंतव्य का रास्ता भूल जाता है। उसकी स्मृति में संचित सारी पुरानी निशानियाँ उसे धोखा दे जाती

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

हैं; क्योंकि सभी ओर पुरातन का ध्वंस एवं नए का सृजन हो रहा है। जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं रहता, सबकुछ परिवर्तनशील है। प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि उस दुनिया में पाठक को प्रवेश कराता है, जो एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है। पल-पल बनती-बिगड़ती इस दुनिया में स्मृतियों एवं पुराने मूल्यों के भरोसे नहीं जिया जा सकता। इन नए इलाकों में मानवीय संबंधों में आत्मीयता या अपनेपन की भावना का अभाव बढ़ता जा रहा है। कोई अपना मानकर पुकारने वाला मौजूद नहीं है।

प्रश्न 16 : नए इलाके में कवि को अपना गंतव्य न मिलने के क्या कारण हैं? पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर : कवि कहता है कि नए इलाके में रोज़-रोज़ कुछ-न-कुछ नया निर्माण होता है। रोज़-रोज़ नई आबादी का बढ़ना, नए भवनों का बनना एक समस्या है। नई घटनाएँ भी घटती हैं। रोज़-रोज़ नई-नई इमारतों के निर्माण से मनुष्य रास्ता भी भूल जाता है। वह पहले घर जाने के लिए जिन-जिन निशानियों को याद रखता था, अब वे निशानियाँ वहाँ नहीं मिलतीं, बल्कि उनके स्थान पर कुछ नया निर्माण नज़र आता है। इसलिए वह रास्ता भटक जाता है। इन सबके कारण उसके चारों ओर अजनबियों का एक संसार बस जाता है। अतः वह उनके बीच अपनी पहचान के लिए तथा आत्मीयता के लिए तरसता है। नए निर्माण के कारण हमारी पुरानी यादें बेकार हो जाती हैं।

आज नगरों में बसने वाली बस्तियाँ इतनी तीव्रता से बढ़ रही हैं कि आदमी को अपना घर तक ढूँढ़ना कठिन हो गया है। यदि वह कुछ दिन बाद अपनी बस्ती में लौटकर आए तो रास्ता तक भूल जाएगा। उसकी पुरानी निशानियाँ देखते-ही-देखते नष्ट हो जाती हैं। दुनिया इतनी तेज़ी से बदल रही है कि जो निर्माण एक दिन पहले किया जाता है, दूसरे दिन तक वह पुराना पड़ चुका होता है।

प्रश्न 17 : 'नए इलाके में' कविता में कवि ने नगरीय जीवन की किस विडंबना का वर्णन किया है?

उत्तर : 'नए इलाके में' कविता में कवि ने महानगरों में पल-पल होने वाले परिवर्तन को दिखाया है। महानगरों में जैसे-जैसे जनसंख्या में बढ़ोतरी हो रही है, वैसे-वैसे नई-नई बस्तियाँ बसती जा रही हैं। ये निर्माण कार्य इतनी तेज़ी से और अधिकता के साथ हो रहे हैं कि कवि को ऐसा लगता है जैसे वसंत का गया पतझड़ में लौटा हो। उसने अपने गंतव्य तक पहुँचने के लिए जो पुराने निशान बनाए थे, वे सभी लुप्त हो गए हैं। इसके कारण कवि प्रायः रास्ता भटक जाता है। वह या तो एक-दो घर पीछे चल देता है या दो घर आगे चला जाता है। विडंबना यह है कि इस नित नव-निर्माण में अपनापन और अपनी पहचान कहीं खो गई है।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

इन नए बसते इलाकों में
जहाँ रोज़ बन रहे हैं नए-नए मकान
मैं अकसर रास्ता भूल जाता हूँ
धोखा दे जाते हैं पुराने निशान
खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़
खोजता हूँ ढहा हुआ घर
और ज़मीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बाएँ
मुड़ना था मुझे
फिर दो मकान बाद बिना रंगवाले लोहे के फाटक का
घर था इकमंज़िला
और मैं हर बार एक घर पीछे
चल देता हूँ
या दो घर आगे ठकमकाता

1. **रोज़ नए-नए मकान कहाँ बन रहे हैं–**
(क) गाँव में (ख) शहर में
(ग) पुराने इलाकों में (घ) नए बसते इलाकों में।

2. **कवि के साथ नए इलाके में अक्सर क्या होता है–**
(क) उसे पुराने मित्र मिल जाते हैं (ख) वह रास्ता भूल जाता है
(ग) उसे कुछ कुत्ते मिल जाते हैं (घ) वह गिर पड़ता है।

3. **कवि को कौन धोखा दे जाता है–**
(क) उसका भाई (ख) उसका मित्र
(ग) उसका नौकर (घ) पुराने निशान।

4. **कवि क्या खोजता है–**
(क) पीपल का पेड़ (ख) ढहा हुआ घर
(ग) ज़मीन का खाली टुकड़ा (घ) ये सभी।

5. **इकमंज़िला मकान कैसा था–**
(क) बहुत ऊँचा
(ख) टूटा-फूटा
(ग) बिना रंगवाले लोहे के फाटक का
(घ) लकड़ी के फाटक का।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. **पुराने निशान क्या करते हैं–**
(क) कवि को आकर्षित करते हैं
(ख) कवि को धोखा दे जाते हैं
(ग) कवि को भटका देते हैं
(घ) कवि को बीते समय की याद दिलाते हैं।

7. **'आकाश के ढहने' का आशय है–**
(क) ऊँचे भवनों का गिर जाना
(ख) बड़े-बड़े पेड़ों का उखड़ जाना
(ग) बिजली का गिरना
(घ) उच्च आदर्शों का समाप्त हो जाना।

8. **कवि को अंत में किस बात की संभावना लगती है–**
(क) शायद कोई जाना-पहचाना उसे पुकार ले
(ख) शायद कोई उसे रास्ता बता दे
(ग) शायद कोई उसे ठहरने का स्थान दे दे
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. **'नए इलाके में' कवि किस नव-निर्माण की बात कर रहा है और स्मृति को क्यों खोज रहा है?**
10. **कवि को स्मृति का भरोसा क्यों नहीं है?**
11. **'नए इलाके में' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

II. खुशबू रचते हैं हाथ

पाठ का परिचय

दूसरी कविता 'खुशबू रचते हैं हाथ' है। इस कविता में कवि ने हमारे समाज में व्याप्त असमानता को उजागर किया है। कवि ने दिखाया है कि जो वर्ग समाज में सौंदर्य और समृद्धि की सृष्टि करता है, वह स्वयं गंदगी और अभाव में जीवन व्यतीत करता है। अगरबत्ती बनाकर चारों ओर खुशबू बिखेरने वाले हाथों में रोटी का टुकड़ा भी नहीं है और वे नरकतुल्य अस्वाथ्यकर गंदे स्थानों में रहकर जीवनयापन करते हैं। यह हमारे समाज के लिए एक कलंक है। इस पर विचार होना चाहिए।

काव्यांशों का भावार्थ

1. **कई गलियों के बीच**
   कई नालों के पार
   कूड़े-करकट
   के ढेरों के बाद
   बदबू से फटते जाते इस
   टोले के अंदर
   खुशबू रचते हैं हाथ
   खुशबू रचते हैं हाथ।

   भावार्थ—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने सुगंधित अगरबत्ती बनाने वाले मज़दूरों के नारकीय जीवन का चित्रण किया है। कवि कहता है कि खुशबूदार वस्तुओं की रचना करने वाले ये मज़दूर दुनिया को खुशबू बाँटते हैं, लेकिन स्वयं कई गंदी गलियों के बीच से गुज़रकर कई गंदे नालों के पार कूड़े-करकट के ढेरों के पीछे बसे टोले में रहते हैं, जहाँ का वातावरण बदबू से फटा पड़ता है।

2. **उभरी नसों वाले हाथ**
   घिसे नाखूनों वाले हाथ
   पीपल के पत्ते-से नए-नए हाथ
   जूही की डाल-से खुशबूदार हाथ
   गंदे कटे-पिटे हाथ
   ज़ख्म से फटे हुए हाथ
   खुशबू रचते हैं हाथ
   खुशबू रचते हैं हाथ।

   भावार्थ—कवि कहता है कि ये मज़दूर जीवन की विपरीत परिस्थितियों में भी काम करते हैं। इन मज़दूरों में कुछ बूढ़े लोग भी हैं, जिनके हाथों की नसें कमज़ोरी के कारण स्पष्ट दिखाई देने लगी हैं और कुछ ऐसे लोग भी हैं, जिनके नाखून तक काम करते-करते घिस चुके हैं।

   कुछ नन्हें बच्चे, जिनके हाथ पीपल के नए पत्तों की तरह कोमल हैं या फिर वे नवयुवतियाँ, जिनके हाथ जूही की डाल की तरह खुशबूदार प्रतीत होते हैं। कालांतर में काम के बोझ से गंदे, कटे और घाव वाले उनके हाथ दर्द के बावजूद अपने काम को निरंतर करते रहते हैं। भाँति-भाँति के ये लोग बीभत्स जीवन-परिस्थितियों के बाद भी खुशबूदार वस्तुओं की रचना करते हैं।

3. **यहीं इस गली में बनती हैं**
   मुल्क की मशहूर अगरबत्तियाँ
   इन्हीं गंदे मुहल्लों के गंदे लोग
   बनाते हैं केवड़ा, गुलाब, खस और रातरानी
   अगरबत्तियाँ
   दुनिया की सारी गंदगी के बीच
   दुनिया की सारी खुशबू
   रचते रहते हैं हाथ
   खुशबू रचते हैं हाथ
   खुशबू रचते हैं हाथ।

   भावार्थ—कवि यहाँ जीवन की विडंबना का यथार्थपरक चित्रण करता हुआ कहता है कि देश की प्रसिद्ध अगरबत्तियाँ इन्हीं गंदे मोहल्लों में गंदे लोगों के द्वारा दयनीय और विपरीत परिस्थितियों में बनती हैं। केवड़ा, गुलाब, खस एवं रातरानी जैसी अलग-अलग सुगंधों से परिपूर्ण अगरबत्तियों का निर्माण इन्हीं गंदी बस्तियों में होता है। स्वयं गंदगी में रहकर भी ये श्रमिक दूसरों के लिए खुशबूदार अगरबत्तियाँ बनाते हैं और पूरी दुनिया में सुगंध फैलाते हैं।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश—*निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए—*

(1) कई गलियों के बीच
कई नालों के पार
कूड़े-करकट
के ढेरों के बाद
बदबू से फटते जाते इस
टोले के अंदर
खुशबू रचते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ।

उभरी नसों वाले हाथ
घिसे नाखूनों वाले हाथ
पीपल के पत्ते-से नए-नए हाथ
जूही की डाल-से खुशबूदार हाथ
गंदे कटे-पिटे हाथ
ज़ख्म से फटे हुए हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ।

1. **कवि ने काव्यांश में किन हाथों का वर्णन किया है—**
   (क) कविता लिखने वाले हाथों का
   (ख) भोजन बनाने वाले हाथों का
   (ग) खुशबू रचनेवाले हाथों का
   (घ) खिलौने बनाने वाले हाथों का।
2. **खुशबू रचने वाले हाथ किनके हैं—**
   (क) बीड़ी मज़दूरों के
   (ख) स्त्रियों के
   (ग) इत्र बनाने वालों के
   (घ) अगरबत्ती बनाने वाले मज़दूरों के।
3. **अगरबत्ती-मज़दूर कैसे टोले में रहते हैं—**
   (क) साफ़-स्वच्छ टोले में
   (ख) बदबू से भरे टोले में
   (ग) खुशबू से भरे टोले में
   (घ) सुख-सुविधाओं से पूर्ण टोले में।
4. **उभरी नसों वाले हाथ किसके हैं—**
   (क) युवाओं के (ख) वृद्धों के
   (ग) बच्चों के (घ) स्त्रियों के।
5. **'पीपल के पत्ते-से नए-नए हाथ' में अलंकार है—**
   (क) उपमा (ख) रूपक
   (ग) यमक (घ) श्लेष।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (घ) **3.** (ख) **4.** (ख) **5.** (क)।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(2) यहीं इस गली में बनती हैं
मुल्क की मशहूर अगरबत्तियाँ
इन्हीं गंदे मुहल्लों के गंदे लोग
बनाते हैं केवड़ा, गुलाब, खस और रातरानी
अगरबत्तियाँ
दुनिया की सारी गंदगी के बीच
दुनिया की सारी खुशबू
रचते रहते हैं हाथ

खुशबू रचते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ।

1. **इस गली में क्या बनती हैं–**
(क) शहर की प्रसिद्ध मिठाइयाँ
(ख) देश की प्रसिद्ध अगरबत्तियाँ
(ग) देश की प्रसिद्ध साड़ियाँ
(घ) शहर की प्रसिद्ध मोमबत्तियाँ।
2. **कवि ने गंदे मुहल्लों के लोगों को कैसा बताया है–**
(क) अच्छे लोग (ख) सुंदर लोग
(ग) गंदे लोग (घ) शिक्षित लोग।
3. **गंदे लोग कौन-सी अगरबत्तियाँ बनाते हैं–**
(क) केवड़ा (ख) गुलाब, खस
(ग) रातरानी (घ) ये सभी।
4. **खुशबू रचने वाले हाथ सारी खुशबू किसके बीच में रचते हैं–**
(क) हरियाली के बीच में
(ख) खुशहाली के बीच में
(ग) दुनिया की सारी गंदगी के बीच में
(घ) दुनिया की सारी खुशबू के बीच में।
5. **काव्यांश के अनुसार समाज में सौंदर्य की सृष्टि करने वाला वर्ग कैसी स्थिति में जीवन बिता रहा है–**
(क) सुखद स्थिति में (ख) भयावह स्थिति में
(ग) समृद्धि में (घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– 1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ग) 5. (ख)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

1. **'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता के कवि का नाम क्या है–**
(क) अरुण कमल (ख) सियारामशरण गुप्त
(ग) रामधारी सिंह 'दिनकर' (घ) हरिवंशराय बच्चन।
2. **'खुशबू रचते हैं हाथ' का अर्थ है–**
(क) मेंहदी लगाना
(ख) फूल सजाना
(ग) खुशबूदार अगरबत्तियाँ बनाना
(घ) हाथों पर खुशबू लगाना।
3. **खुशबू रचते हाथ कवि को कहाँ दिखाई देते हैं–**
(क) गंदी गलियों के बीच
(ख) कई नालों के पार
(ग) बदबू से भरे वातावरण में बसे टोले में
(घ) उपर्युक्त सभी जगह।
4. **जहाँ अगरबत्तियाँ बनती हैं, वहाँ का माहौल कैसा है–**
(क) बहुत बदबूदार (ख) गंदगी से भरा
(ग) कूड़े-करकट के ढेर से युक्त (घ) ये सभी।
5. **कविता के आधार पर बताइए कि गलियों और नालों के बीच किसके घर हैं–**
(क) धनवानों के (ख) राजनेताओं के
(ग) मज़दूरों के (घ) अगरबत्ती बनाने वालों के।
6. **'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता हमारे समाज की किस समस्या को उजागर करती है–**
(क) दहेज की समस्या को
(ख) लड़के और लड़की में भेदभाव को
(ग) जनसंख्या वृद्धि की समस्या को
(घ) मज़दूरों की दयनीय हालत को।
7. **कवि ने कविता में जिस माहौल का वर्णन किया है, वहाँ जीवन कैसा है–**
(क) सुखद (ख) दूभर
(ग) आसान (घ) खुशहाल।
8. **'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता में कैसे हाथों की चर्चा की है–**
(क) उभरी नसों वाले, घिसे नाखूनों वाले
(ख) पीपल के पत्ते से नए, जूही की डाल से
(ग) गंदे व कटे-पिटे, ज़ख्म से भरे
(घ) उपर्युक्त सभी।
9. **उभरी नसों वाले हाथ किसके हैं–**
(क) बच्चों के (ख) स्त्रियों के
(ग) वृद्धों के (घ) युवाओं के।
10. **उभरी नसों वाले हाथों में नसें क्यों उभर गई हैं–**
(क) खुशी के कारण (ख) दुःख के कारण
(ग) कमज़ोरी के कारण (घ) इनमें से कोई नहीं।
11. **पीपल के पत्ते जैसे नए-नए हाथ किसके हैं–**
(क) स्त्रियों के (ख) युवाओं के
(ग) बच्चों के (घ) वृद्धों के।
12. **जूही की डाल से खुशबूदार हाथ किसके हैं–**
(क) नवयुवतियों के (ख) किशोरों के
(ग) युवाओं के (घ) इनमें से किसी के नहीं।
13. **कटे-पिटे हाथ किसके हैं–**
(क) नवयुवतियों के (ख) मालिकों के
(ग) मज़दूरों के (घ) किसानों के।
14. **'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता में किस वस्तु की खुशबू की बात की गई है–**
(क) फूलों की (ख) इत्र की
(ग) अगरबत्तियों की (घ) इन सभी की।
15. **'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता के माध्यम से कवि किस विषमता का वर्णन करता है–**
(क) लड़के-लड़की की विषमता का
(ख) मज़दूर-मालिक की विषमता का
(ग) धनी और निर्धन वर्ग की विषमता का
(घ) स्त्री-पुरुष की विषमता का।
16. **'कौन-सी खुशबू वाली अगरबत्तियाँ बनती हैं'–**
(क) केवड़ा (ख) गुलाब
(ग) खस और रातरानी (घ) ये सभी।
17. **'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता के द्वारा कवि उच्च वर्ग को उसके किस कर्तव्य की याद दिलाता है–**
(क) भूखों को भोजन कराना
(ख) विद्यालय और अस्पताल बनवाना
(ग) मज़दूरों का जीवन-स्तर सुधारना
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

18. **इस कविता में कवि ने क्या दिखाने का प्रयास किया है–**
(क) अखबार बेचने वालों की स्थिति
(ख) रिक्शा चलाने वालों की स्थिति
(ग) किसानों की स्थिति
(घ) अगरबत्ती-मज़दूरों की स्थिति।

उत्तर– **1.** (क) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (घ) **6.** (घ) **7.** (ख) **8.** (घ) **9.** (ग) **10.** (ग) **11.** (ग) **12.** (क) **13.** (ग) **14.** (ग) **15.** (ग) **16.** (घ) **17.** (ग) **18.** (घ)।

भाग-2

वर्णनात्मक प्रश्न
काव्य-बोध परखने हेतु प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–

प्रश्न 1 : 'खुशबू रचते हैं हाथ' का क्या तात्पर्य है?

उत्तर : 'खुशबू रचते हैं हाथ' से तात्पर्य उन मेहनतकश मज़दूरों से है, जो गंदी बस्तियों में रहकर भी अपने हाथों से खुशबूदार अगरबत्तियाँ बनाते हैं।

प्रश्न 2 : खुशबू रचते हाथ कवि को कहाँ दिखाई देते हैं?

उत्तर : कवि को खुशबू रचते हाथ गंदी गलियों के बीच, कई नालों के पार, कूड़े-करकट के ढेरों के पीछे बदबू से भरे वातावरण में बसे टोले में दिखाई देते हैं।

प्रश्न 3 : 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता में कितने तरह के हाथों की चर्चा हुई है?

उत्तर : 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता में खुशबू रचते हाथ उभरी नसों वाले, घिसे नाखून-वाले, पीपल के पत्ते-से नए-नए कोमल, जूही की डाल-से खुशबूदार, गंदे व कटे-पिटे, ज़ख्म से भरे आदि अनेक प्रकार के हाथों की चर्चा हुई है।

प्रश्न 4 : 'पीपल के पत्ते जैसे नए-नए हाथ' से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर : इस पंक्ति के द्वारा कवि बताना चाहता है कि अगरबत्ती मज़दूर गंदगीभरे माहौल में रहने के लिए ही विवश नहीं हैं, बल्कि उन्हें अपने बच्चों से बाल मज़दूरी भी करानी पड़ती है। उनके छोटे-छोटे बच्चे, जिनके हाथ पीपल के नए पत्तों जैसे कोमल हैं, वे दिनभर अगरबत्तियाँ बनाते रहते हैं।

प्रश्न 5 : जहाँ अगरबत्तियाँ बनती हैं, वहाँ का माहौल कैसा होता है?

उत्तर : जहाँ अगरबत्तियाँ बनती हैं, वहाँ का माहौल बहुत बदबूदार और गंदगीभरा होता है; क्योंकि अगरबत्तियाँ बनाने वाले मज़दूर प्रायः कूड़े-करकट के ढेर वाले इलाकों में ही रहते हैं।

प्रश्न 6 : जो हाथ खुशबू रचते हैं, उन्हें गंदी गलियों में क्यों रहना पड़ता है?

उत्तर : खुशबू रचने वाले हाथ गरीब मज़दूरों के होते हैं। अपनी घोर गरीबी के कारण इन लोगों को गंदी गलियों में रहना पड़ता है।

प्रश्न 7 : 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता में कवि ने बहुवचन का बहुत अधिक प्रयोग किया है, इसका क्या कारण है?

उत्तर : बहुवचन का अत्यधिक प्रयोग करके कवि बताना चाहता है कि अगरबत्ती बनाने वाले मज़दूरों की तरह का नारकीय जीवन जीने वाले मज़दूरों की संख्या हमारे देश में बहुत अधिक है।

प्रश्न 8 : 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर : इस कविता के माध्यम से कवि उस माहौल को दिखाना चाहता है, जहाँ साँस लेना भी दूभर होता है, वहाँ मज़दूर रात-दिन लगातार दुनिया को सुगंध बाँटने के लिए विश्व-प्रसिद्ध खुशबूदार अगरबत्तियाँ बनाते हैं। कवि ने उन्हीं हाथों की बदहाल ज़िंदगी को इस कविता का आधार बनाया है। कवि यह बताना चाहता है कि जिन अगरबत्तियों की खुशबू से हम अपने घरों को महकाते हैं, वे वस्तुतः बदबूदार ज़िंदगी जी रहे लोगों की अथाह मेहनत से बनती हैं।

प्रश्न 9 : 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता हमारे समाज की किस समस्या को उजागर करती है?

उत्तर : 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता हमारे समाज में मज़दूरों की दयनीय हालत को उजागर करती है। कवि के अनुसार अगरबत्ती-मज़दूर दयनीय एवं विपरीत परिस्थितियों में, छोटी तंग गलियों से गुज़रकर कूड़े के ढेर में बने टोलों में रहकर दूसरों के लिए खुशबूदार अगरबत्तियाँ बनाते हैं। इन लोगों को जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए भी साधन प्राप्त नहीं होते। अपने घरों को इनकी बनाई अगरबत्तियों से सुगंधित करने वाले लोगों को इनके विषय में अवश्य सोचना चाहिए। हमारा समाज इनकी तरफ से बहुत उदासीन है।

प्रश्न 10 : 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता के द्वारा कवि उच्चवर्ग को उसके किस कर्तव्य की याद दिलाना चाहता है?

उत्तर : इस कविता के द्वारा कवि उच्चवर्ग के लोगों को बताना चाहता है कि वे जिन भोग-विलास की वस्तुओं का उपभोग करते हैं। जिन वस्तुओं के कारण वे स्वयं को उच्च और श्रेष्ठ मानते हैं, वे सभी वस्तुएँ गरीब मज़दूरों द्वारा बनाई जाती हैं। वे मज़दूर बहुत ही निम्नस्तरीय जीवन बिताते हैं। उच्चवर्ग का कर्तव्य है कि वह इन मज़दूरों के जीवन-स्तर को ऊपर उठाए, इनकी उपेक्षा न करे।

प्रश्न 11 : कवि ने अगरबत्तियाँ बनाने वाले मजदूरों की शारीरिक व मार्मिक स्थिति का वर्णन किस प्रकार किया है?

उत्तर : कवि ने अगरबत्तियाँ बनाने वाले मजदूरों की शारीरिक स्थिति का वर्णन करते हुए बताया है कि इन काम करने वालों में अनेक ऐसे वृद्ध हैं जिनके हाथों की नसें भी फूल चुकी हैं और हाथों के नाखून भी काम कर-करके घिस चुके हैं। वह अत्यंत मार्मिक एवं दयनीय दशा है कि इन बूढ़े हाथों से अभी भी काम लिया जा रहा है। वे स्वयं कष्ट सहकर भी हमारे लिए सुगंधित अगरबत्तियाँ बना रहे हैं।

प्रश्न 12 : कौन-कौन सी खुशबू वाली अगरबत्तियाँ बनती हैं और कहाँ बनती हैं?

उत्तर : खुशबू वाली अगरबत्तियों में कई प्रकार की खुशबू होती। इनमें केवड़ा, गुलाब, खस और रातरानी के फूलों की खुशबू वाली अगरबत्तियाँ बनती हैं। ये अगरबत्तियाँ जहाँ बनाई जाती हैं, वे बहुत ही गंदे बदबूदार इलाके होते हैं। वहाँ कूड़ा-करकट इधर-उधर पड़ा रहता है। गंदे नालों का पानी बहता रहता है।

प्रश्न 13: कविता में किस वस्तु की खुशबू की बात की जा रही है? खुशबू रचने वाले हाथ कैसे वातावरण में रहते हैं?

उत्तर : कविता में 'अगरबत्ती' की खुशबू की बात की जा रही है। इस खुशबू वाली अगरबत्ती की रचना करने वाले बहुत ही गंदे वातावरण में रहते हैं। ये लोग बहुत ही गरीब होते हैं जो कि गंदी-गंदी बस्तियों में रहते हैं। इनके आस-पास कूड़े-करकट के ढेर लगे रहते हैं। गंदा पानी आस-पास इकट्ठा होता है। मगर इतने गंदे वातावरण में रहकर भी ये लोग हमें खुशबू प्रदान करते हैं।

प्रश्न 14 : इस कविता के माध्यम से कवि किस विषमता का वर्णन कर रहा है?

उत्तर : इस कविता के माध्यम से कवि समाज के दो विभिन्न वर्ग धनी एवं निर्धन के बीच की विषमताओं का वर्णन कर रहा है। निर्धन वर्ग गंदी बस्तियों में रहकर भी धनी लोगों के लिए अगरबत्तियाँ

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

बना रहे हैं। वे स्वयं बदबूदार इलाकों में रहते हैं, मगर हमें खुशबू प्रदान करते हैं। उनका अपना जीवन कूड़े-करकट के ढेर के पास गुजरता है मगर वे सुगंध फैलाते हैं। यह निर्धन वर्ग दूसरे धनी वर्ग के जीवन को सुख-सुविधाएँ प्रदान करता है।

प्रश्न 15 : कवि ने यह क्यों कहा है कि 'खुशबू रचते हैं हाथ'?

उत्तर : कवि ने ऐसा इसलिए कहा है कि गंदगी में जीवन व्यतीत करने वाले लोगों के हाथ खुशबूदार पदार्थों की रचना करते हैं क्योंकि ये लोग स्वयं गंदगी और विषम परिस्थितियों में अपना जीवन गुजारते हैं परंतु दूसरों को खुशबू प्रदान करते हैं।

यहाँ पर कवि श्रमिकों के हालात पर प्रसन्न नहीं है, बल्कि वह यह कहना चाहता है कि हमें उनकी दशा सुधारने का प्रयास करना चाहिए। हमें भी अपना नैतिक कर्तव्य समझकर ऐसे मज़दूर वर्ग को ऊपर उठाने का प्रयास करना चाहिए।

प्रश्न 16 : 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता का केंद्रीयभाव अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : प्रस्तुत कविता में कवि ने अगरबत्ती-मज़दूरों की गरीबी, विवशता और दुर्दशा का मार्मिक चित्रण किया है। इस कविता के द्वारा वे समाज में मज़दरों की स्थिति स्पष्ट करना चाहते हैं। यह कविता सामाजिक विषमताओं का बेनकाब करती है। जो अगरबत्ती-मज़दूर धनी और संपन्न लोगों के घरों को खुशबू से भरते हैं, वे स्वयं कूड़े के ढेरों के पीछे बसे टोले में रहने को विवश हैं। वे इतने गरीब हैं कि जीवन-निर्वाह करने के लिए उनमें बच्चे, बूढ़े, बीमार, चोटिल, सुंदर नवयुवतियाँ आदि सभी को काम करना पड़ता है। कवि इस कविता द्वारा यह संदेश देना चाहता है कि समाज के जिम्मेदार नागरिकों को इन मज़दूरों का जीवन-स्तर सुधारने के लिए अवश्य प्रयत्न करना चाहिए। इस कविता के द्वारा कवि हमारे समाज में व्याप्त असमानता को भी उजागर करना चाहता है। सुगंधित अगरबत्तियों का व्यापार करने वाले व्यापारी सभी सुख-सुविधाओं से संपन्न हैं, लेकिन अगरबत्तियाँ बनाने वाले मज़दूर नारकीय जीवन व्यतीत करते हैं। कवि समाज से इस समस्या के समाधान की अपेक्षा करता है।

प्रश्न 17 : अगरबत्ती-मज़दूर किन विवशताओं के कारण गंदगीभरे माहौल में रहते हैं?

उत्तर : खुशबू रचनेवाले लोग प्रायः बहुत गरीब होते हैं। जो लोग खुशबू फैलाने वाली अगरबत्तियों का निर्माण करते हैं, वे स्वयं कूड़े-करकट से भरी मलिन बस्तियों में रहते हैं। उन लोगों को कई गलियों के बीच, अनेक नालों को पार करने के बाद कूड़े-करकट और गंदगी के ढेरों के आस-पास रहना पड़ता है, जहाँ बदबू से मनुष्य की नाक फटने को रहती है। कवि कहता है पूरे संसार को खुशबू देने वाले मज़दूर विभिन्न प्रकार के हैं। उनमें बूढ़े भी हैं, जिनके हाथों की नसें उभर चुकी हैं या जिनके हाथों के नाखून काम करते-करते घिस चुके हैं। इन अगरबत्तियाँ बनाने वाले मज़दूरों में नन्हें बालक-बालिकाएँ भी हैं, जिनके हाथ पीपल के पत्तों के समान कोमल हैं।

कालांतर में काम के बोझ से गंदे, कटे और घाव से फटे हुए उनके हाथ दर्द सहते हुए भी आर्थिक विवशता के कारण काम करते रहते हैं। भाँति-भाँति के ये लोग वीभत्स जीवन परिस्थितियों के बाद भी खुशबूदार वस्तुओं की रचना करते हैं। गंदे वातावरण में रहने वाले ये लोग अन्य लोगों के जीवन में सुगंध भरते हैं। केवड़ा, गुलाब, खस एवं रातरानी आदि अलग-अलग खुशबूदार अगरबत्तियों का निर्माण इन्हीं गंदी व मलिन बस्तियों में ही होता है। कवि कहता है कि ये लोग दयनीय ज़िंदगी जी रहे हैं। इनकी बस्ती गंदी व दुर्गंधमय होती है। ये लोग आर्थिक रूप से कमजोर एवं पिछड़े होते हैं।

प्रश्न 18 : ''दुनिया की सारी गंदगी के बीच दुनिया की सारी खुशबू रचते हैं हाथ''–पंक्ति के द्वारा कवि किस सत्य को उजागर करना चाहता है?

उत्तर : 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता में कवि ने खुशबू का नहीं, बल्कि खुशबू के पीछे छिपे बदबूदार सच को उजागर किया है। खुशबू रचने वाले हाथ नाक फटने वाली बदबूभरे इलाके में रहते हैं। बदबू केवल वातावरण में ही नहीं है, यह लोगों के जीवन में भी प्रवेश कर गई है। चारों ओर गंदगी का वातावरण है, वे उस अहसास से परे केवल अगरबत्तियाँ बनाने में लगे रहते हैं।

यह कितनी त्रासद अवस्था है कि खुशबू का व्यापार करने वाले हाथ सुख-सुविधासंपन्न हैं, साफ़-सुथरे स्वस्थ-स्वच्छ वातावरण में रहते हैं, सब सुविधाएँ-खुशियाँ उनके इर्द-गिर्द मौजूद हैं। इसके विपरीत खुशबू रचने वाले हाथ उपर्युक्त सभी सुख-सुविधाओं से वंचित हैं। उन्हें तो इस विषय में सोचने की भी शायद फुरसत नहीं मिलती होगी। इसलिए हाथों के कटे-फटे, नसों के उभरे होने, कोमल-कठोर तथा पिटे होने पर भी खुशबू रचने का काम नहीं रुकता। वातावरण और सामाजिक संबंधों में उठती भयंकर बदबू के बाद भी खुशबूदार वस्तु की खुशबू में कोई कमी नहीं होती। इसी खुशबू का बदबूदार सच कवि ने बड़ी सूक्ष्मता से अभिव्यक्त किया है।

प्रश्न 19 : 'गंदगी में रहकर भी खुशबू का निर्माण'–कथन के द्वारा कवि देश की किस विषमता की ओर इशारा कर रहा है?

उत्तर : 'गंदगी में रहकर भी खुशबू का निर्माण'–कथन के द्वारा कवि समाज के दो विभिन्न वर्गों की ओर हमारा ध्यान खींचना चाहता है। दोनों वर्गों में एक शारीरिक श्रम करने वाले निर्धन लोग हैं और दूसरे मानसिक श्रम करने वाले पढ़े-लिखे लोग हैं। दोनों वर्गों में विषमता है। आर्थिक स्थिति में, सामाजिक स्थिति में, परिवेश में–ये दोनों वर्ग पूर्णतः अलग हैं। भले ही गंदगी के बीच रहकर ये लोग हमें अगरबत्तियों द्वारा खुशबू प्रदान करते हैं। मगर दोनों वर्गों में कोई समानता नहीं है।

प्रश्न 20 : हमारे देश में मानसिक और शारीरिक श्रम करने वालों में किस प्रकार का भेदभाव किया जाता है? 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता के आलोक में लिखिए।

उत्तर : हमारे देश में शारीरिक और मानसिक श्रम करने वालों में अत्यंत भेदभाव है। सबसे पहले तो शारीरिक श्रम करने वालों को उतना सम्मान नहीं मिलता जितना कि मानसिक श्रम करने वालों को मिलता है। शारीरिक श्रम करने वाले मेहनत अधिक करते हैं, परंतु धर्नाजन उतना नहीं कर पाते। मानसिक श्रम करने वाले आर्थिक रूप से बेहतर होते हैं। 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता में भी यही बताया गया है कि जो गंदे परिवेश में रहते हैं वे दूसरों के लिए सुगंधित अगरबत्तियाँ बनाते हैं। यानी शारीरिक श्रमिकों को बदबू को झेलना पड़ता है, लेकिन खुशबू दूसरों के पास जाती है।

प्रश्न 21 : दुनिया की सारी गंदगी के अंदर बसती है अनोखी खुशबू' इस पंक्ति का सार लिखिए।

उत्तर : इस पंक्ति के द्वारा कवि ने यह समझने का प्रयास किया है कि गंदी बस्तियाँ, गंदे मुहल्लों और गंदे वातावरण में रहने वाले लोगों के बीच ही उस वस्तु का निर्माण किया जाता है, जो हमें खुशबू

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रदान करती है। बदबूदार इलाकों में रहने वाले लोगों द्वारा ही अलग-अलग खुशबू वाली अगरबत्तियाँ बनाई जाती हैं। यानी कि उसी बदबू और गंदगी के बीच से ही खुशबू बाहर निकलकर आती है।

प्रश्न 22 : 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता के माध्यम से कवि ने क्या संदेश दिया है?

उत्तर : इस कविता का मुख्य संदेश समाज के उस निम्न वर्ग की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करना है, जो कठिन परिश्रम करते हैं। दिन-रात मेहनत करते हैं, उनकी आर्थिक स्थिति फिर भी अच्छी नहीं है। न ही जिस परिवेश में वे रहते हैं, वह ही अच्छा है। ये लोग ऐसे गंदे माहौल में रहकर हमें खुशबू प्रदान करते हैं। वास्तव में हम सबका यह कर्तव्य बनता है कि समाज के इस उपेक्षित वर्ग के स्तर को ऊँचा-उठाएँ। हमें चाहिए कि धनी और निर्धन वर्ग के बीच की दूरी को कम करें। उनके बीच फैली विषमताओं को समानताओं में बदलें।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

कई गलियों के बीच
कई नालों के पार
कूड़े-करकट
के ढेरों के बाद
बदबू से फटते जाते इस
टोले के अंदर
खुशबू रचते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ।

उभरी नसों वाले हाथ
घिसे नाखूनों वाले हाथ
पीपल के पत्ते-से नए-नए हाथ
जूही की डाल-से खुशबूदार हाथ
गंदे कटे-पिटे हाथ
ज़ख्म से फटे हुए हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ।

1. कवि ने काव्यांश में किन हाथों का वर्णन किया है–
(क) कविता लिखने वाले हाथों का
(ख) भोजन वनाने वाले हाथों का
(ग) खुशबू रचनेवाले हाथों का
(घ) खिलौने बनाने वाले हाथों का।

2. खुशबू रचने वाले हाथ किनके हैं–
(क) बीड़ी मज़दूरों के
(ख) स्त्रियों के
(ग) इत्र बनाने वालों के
(घ) अगरबत्ती बनाने वाले मज़दूरों के।

3. अगरबत्ती-मज़दूर कैसे टोले में रहते हैं–
(क) साफ़-स्वच्छ टोले में
(ख) बदबू से भरे टोले में
(ग) खुशबू से भरे टोले में
(घ) सुख-सुविधाओं से पूर्ण टोले में।

4. उभरी नसों वाले हाथ किसके हैं–
(क) युवाओं के (ख) वृद्धों के
(ग) बच्चों के (घ) स्त्रियों के।

5. 'पीपल के पत्ते-से नए-नए हाथ' में अलंकार है–
(क) उपमा (ख) रूपक
(ग) यमक (घ) श्लेष।

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

6. 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता के कवि का नाम क्या है–
(क) अरुण कमल
(ख) सियारामशरण गुप्त
(ग) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(घ) हरिवंशराय बच्चन।

7. पीपल के पत्ते जैसे नए-नए हाथ किसके हैं–
(क) स्त्रियों के (ख) युवाओं के
(ग) बच्चों के (घ) वृद्धों के।

8. 'कौन-सी खुशबू वाली अगरबत्तियाँ बनती हैं'–
(क) केवड़ा (ख) गुलाब
(ग) खस और रातरानी (घ) ये सभी।

9. 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता के द्वारा कवि उच्च वर्ग को उसके किस कर्तव्य की याद दिलाता है–
(क) भूखों को भोजन कराना
(ख) विद्यालय और अस्पताल बनवाना
(ग) मज़दूरों का जीवन-स्तर सुधारना
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–

10. 'खुशबू रचते हैं हाथ' का क्या तात्पर्य है?

11. जहाँ अगरबत्तियाँ बनती हैं, वहाँ का माहौल कैसा होता है?

12. इस कविता के माध्यम से कवि किस विषमता का वर्णन कर रहा है?

13. 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता के माध्यम से कवि ने क्या संदेश दिया है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in